इसलिए सर्वशक्तिवान कहते हैं। बाप कहते हैं मैं कुछ भी करता नहीं हूं। मेरा तो काम ही है रास्ता बताना। बाप को भूले जेल खलास। फिर बाप को याद करने से मालिक बन जाते हो। यह भी तुम जानते हो। यह चक्र भी याद रखो तो बहुत खुशी रहे। भगवान हमको पढ़ाते हैं भगवान-भगवती बनाने। परन्तु माया खुशी में रहने न देती है। जब तक जंक न निकले। पतित को पावनबनना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान इस एक ही जन्म में बनना है। ड्रामा प्लैन अनुसार हरेक पुरुषार्थ कर रहे हैं। न चाहते भी संकल्पों-विकल्पों के तूफान बहुत आवेंगे। क्योंकि तुम अविनाशी सर्जन की दवाई करते हो। तो बिमारी उठेंगी। इसको ही तूफान कहा जाता है। बाबा ने समझाया है शिव के', ल०ना०के, राम के पुजारी अच्छा उठावेंगे। उनको झट साक्षात्कार में आवेगा। और गंगा घाट पर जाये बैठो। बोलो पतितपावन तो बाप है या यह पानी। इन से तुम पावन कैसे बनेंगे। बाबा फरुखाबाद वालों को चैक लिखेंगे। जो बाबा पर्चे के लिए कहते रहते हैं और कोई ने छपा कर नहीं भेजा है। उन्हों ने भेजा है। अच्छी मेहनत म्युजियम आदि बना रहे हैं। अपना2 देते रहते हैं म्युजियम खोलो। बहुतों का कल्याण होगा। निमित्त हम बनेंगे बहुतों की आशीर्वाद मिलेंगी। अज्ञान काल में भी बाप से लेते हैं। बाप से दो मूठी चावल बदलीमडल लेते हैं यह तो सब से अच्छा हुआ ना। ऐसे बाप को तो बहुत लव लवली याद करना चाहिए। तुम अपने लिए राजधानी स्थापन कर रहे हो। और राजतिलक के लायक अपने को बनाना है। टीचर टीच करने लिए बांधा हुआ है। इसमें कृपा आदि की बात ही=हवी नहीं। रहम कृपा भी यह गुरुओं ने किया जो तुम विकारी बन पड़े हो। बाप ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है। सब को धनवान सुखी स्वर्ग का मालिक बनाकर खुद अपने शान्तिधाम बैठ जाते हैं। ऐसे बापको तो प्यार करना चाहिए ना। भक्ति मार्ग में बच्चों इन्तजार किया है ज्यादा आप आवेंगे तो हम आप के बनेंगे? दूसरा न कोई। बाकी तो यह सब मरे पड़े हैं। हम भी पढ़ाते हैं। जानते हैं पढ़ कर पूरा किया तो यहशरीर खत्म हो जावेगा। अभी पढ़ाने वाला आया है। सिर्फ पढ़ना है और बाप को याद करना है। देवीगुण धारण करनी है। लेंगे पिलेंगे तो होंगे खराब। ऊंच पद पाना है तो एक रस होना चाहिए। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडनाईट। और नमस्ते।

रात्रि क्लास 5-5-68 "शिव बाबा याद है?"

बच्चों के पास जितना समाचार आते हैं और कोई पास नहीं। क्योंकि जैसे बापसारी सृष्टि के आदि मध्य-अन्त को जानते हैं वैसे बच्चों के पास भी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का समाचार है। इसलिए इनको स्वदर्शनचक्रधारी कहते हैं। बाप को भी जानते हैं और रचना के आदि मध्य अन्त को भी जानते हैं। सिर्फ चक्र को जानने से नई दुनिया के चक्रवर्ती राजा बन जाते हैं। बच्चे जानते हैं बाप से हम यह पद पा रहे हैं। बाप आकरनर से नारायण बनाने का ज्ञान दे रहे हैं। आत्मा जब तक प्युर न हुई है तो यह बन न सके। इसलिए बाप याद की यात्रा सिखला रहे हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करे तब ही पाप भस्म हो। यह है योगाग्नि। यह ज्ञान मिलता ही है कल्प के पुरुषोत्तम संगम युग पर। इसमें आस्तिक भी बनते हैं। बाप को और रचना को जानने से। त्रिकालदर्शी भी बनते हैं। बच्चों को अभी याद है चक्र पूरा हुआ। यह दुनिया अभी खत्म होती है। इसको फिर बेहद का वैराग्य कहा जाता है। बेहद का वैराग्य सिर्फ प्रवृति मार्ग वाले ही करते हैं। निवृति मार्ग वालों का धर्म है ही अलग। पुराने विश्व का सन्यास और नये विश्व की याद रहती है। बाप कहते हैं मैं आता ही हूं संगम पर। पुरानी दुनिया का पूरा सन्यास चाहिये। इन आंखों से जो कुछ देखते हैं वह विनाश हो जाना है। बच्चों को विनाश का सा० भी हुआ। यह भक्ति मार्ग नहीं। भक्ति मार्ग में अनेकों को याद करना पड़ता है। पूजा करनी पड़ती है। लौकिक के बाप के होते पारलौकिक को कहते थे बाबाआप आवेंगे तो हम आप का बन2। जन्म लिये वर्सा लेंगे। ज्ञान और भक्ति का ड्रामा में नूंध है। ज्ञान से विश्व का मालिक भक्ति से विश्व का गुलाम बनते हो। यहां प्रकृति भी रिगार्ड देती है। यहां प्रकृति भी दुःख देती है।

अभी विश्व में रावण राज्य है ना। भारत कितना कंगाल हो पड़ा है। भक्ति को भक्ति, ज्ञान को ज्ञान कहा जाता है। भक्ति को आधा कल्प चलना है। अभी तुम जानते हो हमारा पुराना हिसाब-किताब चुकतु होता है। फिर हम सतोप्रधान बनेंगे। सतोप्रधान से तमोप्रधान, फिर तमोप्र धान से सतोप्रधान बन रहे हैं। बाद निकलते2 हम सतोप्रधान बन रहे हैं। बाद निकलते2 हम सतोप्रधान बन जावेंगे। इसलिए बाप समझाते रहते हैं उठते, बैठते याद में रह सकते हो। जैसे यह कार में मुसाफिरी कर आये हैं वहां बहुत ही याद कर सकते हैं। हम सालवेन्ट थे फिर पुनर्जन्म लेते2 हम इनसालवेन्ट बन पड़े हैं। इस समय की शाहुकारी है कल्प काल... बापने समझाया है यह दुःखधाम है। अपने शान्तिधाम सुखधाम को याद करो। बाप से आत्मा की बहुत प्रीत है। यह याद की यात्रा वा यह ज्ञान फिर कब नहीं सुनेंगे। अभी ही सुनते हो। थोड़ा भी सुनने से स्वर्ग की प्राप्ती होती है। बाप आये ही हैं स्वर्ग की स्थापना करने। तुम बच्चे स्वर्ग के मालिक बनते हो। मालिक थे फिर पुनर्जन्म लेते2 अभी अन्त का जन्म हो गया है। बाप समझाते हैं 84 का चक्र पूरा हुआ फिर अभी वापस जाना है। यह है दुःखधाम। फिर है शान्तिधाम सुखधाम। यह तुम्हारी बुद्धि में ही है। तुम ने ही जाना है। तुम बच्चे ही निश्चय करते हो। निश्चय बुधि विजयन्ती। यानि विजय माला में पिराये जावेंगे। बुधि कहती है यह पुरानी दुनिया है। इनको छोड़ना ही है। बाप आया हुआ है नई दुनिया स्थापन करने। जितना याद करेंगे उतना तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। बापने समझाया है चार्ट रखो। यह युनिवर्सिटी है। वह कथायें तो जन्म-जन्मान्तर सुनी है। गीता भी सुनी परन्तु राज्ययोग से राजाई कहां मिली। आधा कल्प तुम भक्ति में रहे हो। सीढ़ी उतरते आये हो। अभी ज्ञान से चढ़ती कला है। 2। जन्म तुम सुखधाम के मालिक बनते हो। फिर त्रेता में दो कला कम हो जावेंगी। सीढ़ी उतरे हो जूं मिशल। आते2 फिर चढ़ते हो एक सेकण्ड में। इन बातों का किसको पता नहीं है। समय थोड़ा होता जाता। अकाले मृत्यु भी होती जाती है। ड्रामा तुमको पुरुषार्थ जरूर करावेगी। ऐसे नहीं जो नसीब में होगा। पुरुषार्थ से ही प्रारब्ध बनती है। बाप के मत से उच्च प्रारब्ध बनती है। 84 के चक्र को तुम अच्छी रीत जान चुके हो। बापकहते हैं तुम ही पूज्य बनते हो। फिर जिसने तुमको ऐसा बनाया उनकी पूजा करते हो। भक्ति से दुर्गति को पाते जाते हो।

वर्सा मिलना ही है रचता से। रचना से नहीं। तो बच्चों को पूरा रास्ता बताना है। शिव बाबा की जीवनकहानी बच्चे ही जान सकते हैं। बाप का परिचय देना है। और कोई साथ भी बुधि योग न जाये। बाबा आपे के सिवाय और कोई को याद नहीं करेंगे। तुम सतोप्रधान फिर तमोप्रधान बनते जाते हो। यह याद करना है। इस चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बन जाते हो। भक्ति मार्ग में तो बहुत धक्के खाते हैं। कृष्ण तो अभी है नहीं। 84 जन्म भोग तमोप्रधान हो गया। मनुष्य तो कहते है कि भगवान तो है ही। अर्थ तो कुछ भी नहीं जानते है। बाप ही आकर सारी सृष्टि के आद मध्य अन्त का राज़ समझाते है। बच्चों को निश्चय हो गया है कि पतित पावन तो एक ही है। बाप को अपनी राजधानी को और चक्र के आद मध्य और अन्त को ही याद करना है। सो भी इस ही जन्म में। भक्ति बन्दा। इसको ही भक्ति कल्प कहा जाता है।

अब यह तुम जो कुछ भी देखते हो सब कुछ ही खत्म हो जाना है। अब बाप को और अपनी राजधानी को ही याद करना है। अन्त मते सो गते हो जावेंगे। ग्रहस्त व्यवहार में रह कर कमल फूल समान पवित्र रह देवी गुण धारण करते रहो। ज्ञान तो बहुत ही सहज है। बाकी तो माया विघन भी डालती है। तुम्हारे ही इस याद से सारा विश्व ही पावन बन जावेगा। रूहानी बाप को ही याद करना है। रूहानी बाप से ही सुनना है। अच्छा मीठे मीठे सिकी लवे बच्चो को रूहानी बाप वा दादा का दिल जान सिक वा प्रेम से याद प्यार और गुड नाईट। ओम शान्ति।